शोध परिधि
SHODH PARIDHI

साहित्य, कला संस्कृति, मानविकी एवं समाज विज्ञान की
द्विभाषिक षट्मासिक अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका

Volume : 3
Issue : 5 / 2016 June
ISSN : 2349-9575

Annexure-14

107

मुख्य संरक्षक
श्रीयुत गोपाल दास 'नीरज'

प्रधान सम्पादक
डॉ. जीत सिंह

सम्पादक
डॉ. मंजू चौहान

उप सम्पादक
डॉ. किशोर कुमार
डॉ. हरिन्द्र कुमार
डॉ. सत्यन्त कुमार

सह सम्पादक
डॉ. कनक कुमार
डॉ. राजेश मंगला

प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. अर्चना सिंह
डॉ. दिनेश चन्द शर्मा

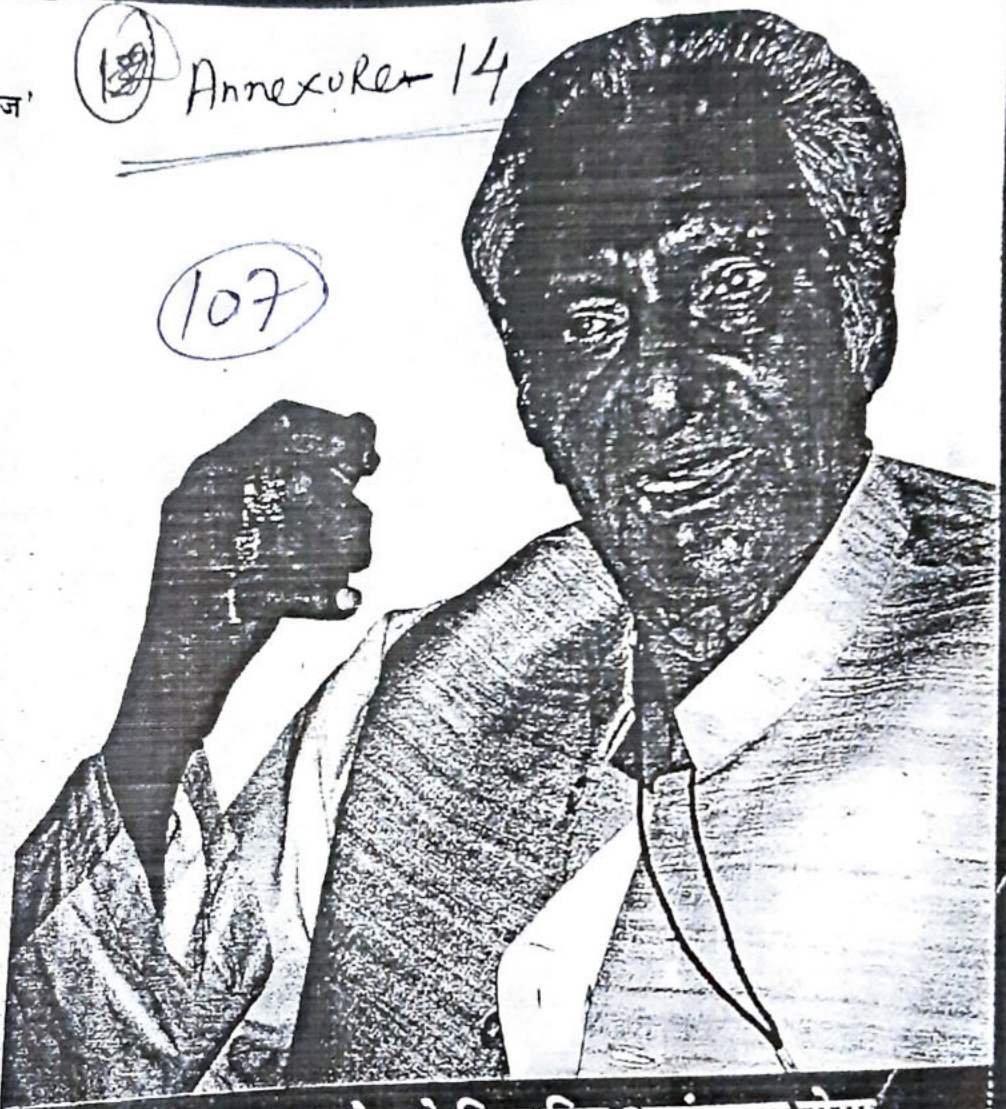

घृणा का प्रेम से जिस दिन अलंकरण होगा,
धरा पे स्वर्ग का उस रोज अवतरण होगा।

5

शोध परिधि - प्रेरणा साहित्य समिति हापुड़ (रजि.)–245101
एवं 80 'जी' से पंजीकृत (उ.प्र.) भारत द्वारा प्रकाशित

130

शोध परिधि ISSN-2349-9575
साहित्य, कला, संस्कृति, मानविकी एवं समाज विज्ञान की
द्विभाषिक षट्मासिक अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका

(107)

आचार्य कुन्तक का काव्य प्रयोजन विषयक मत

डॉ. नीलम शर्मा
असि. प्रो., संस्कृत विभाग
कु0मा0रा0म0स्ना0 महाविद्यालय
बादलपुर (गौ.बुद्धनगर)

शोध सारांश

मनुष्य के प्रत्येक कर्म का कोई न कोई प्रयोजन अवश्य होता है। शास्त्र तथा काव्य सर्जना जैसे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कर्म का भी निश्चित प्रयोजन है, अन्यथा उसकी सार्थकता ही नहीं होगी। इसलिए भारतीय वाङ्मय में प्रत्येक शास्त्र के निर्धारित अनुबन्ध चतुष्ट्श में प्रयोजन का विशिष्ट महत्त्व है। इसी कारण से प्राचीन काल से ही आचार्य काव्य प्रयोजन का निरूपण करते रहे हैं। इसी परम्परा में वक्रोक्ति सम्प्रदाय के प्रवर्तक सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य कुन्तक का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने न केवल काव्य के अपितु अपने काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ का भी पृथक प्रयोजन निरूपति किया है। आचार्य कुन्तक ने चतुर्वर्गफल प्राप्ति, व्यवहार औचित्य का परिज्ञान और अन्तश्चमत्कार रूप में काव्य के तीन प्रयोजन माने हैं। इनमें भी रसानुभूतिजन्य अन्तश्चतम्कार सर्वातिशायी है। यद्यपि इन काव्य प्रयोजनों के निरूपण में पूर्वाचार्यों का प्रभाव है, तथापि पूर्वप्रतिपारित काव्य प्रयोजनों में से मूलभूत और मुख्य प्रयोजनों के ग्रहण और उनके स्वरूप प्रतिपादन में आचार्य का अपना वैशिष्ट्य है। प्रस्तुत शोधपत्र में आचार्य कुन्तक स्वीकृत इन्हीं त्रिविध काव्य प्रयोजनों का स्वरूप, महत्त्व और आचार्य कुन्तक स्वीकृत इन्हीं त्रिविध काव्य प्रयोजनों का स्वरूप, महत्त्व और आचार्य कुन्तक का यत्किंचित् वैशिष्ट्य प्रकाशित किया गया है।

भारतीय काव्यशास्त्र की यह प्रसिद्ध परम्परा रही है कि प्रारम्भ से ही शास्त्रकार तत्तत् शास्त्र के अनुबन्ध चतुष्ट्य-अधिकारी विषय, सम्बन्ध और प्रयोजन का प्रतिपादन करते रहे हैं। यह आवश्यक भी है, क्योंकि जब तक अनुबन्ध चतुष्ट्य का ज्ञान नहीं होगा तब त शास्त्र में प्रवृत्ति हो ही नहीं सकती है। इनमें से प्रयोज अत्यन्त महत्वपूर्ण है, क्योंकि स्वार्थपूर्ण इस संसार बिना प्रयोजन के मनुष्यों की कार्य में प्रवृत्ति परिलक्षि